प्रश्न : साहित्य, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में गुप्तकाल की उपलब्धियों का प्रतिपादन कीजिये?

(सिविल सेवा मुख्य परीक्षा, 1988)

उत्तर : साहित्य, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में गुप्तकाल की उपलब्धियों को देखते हुए कई इतिहासकारों ने गुप्तकाल को *भारतीय इतिहास* का *'स्वर्णयुग'* कहा है। *बार्नेट* के अनुसार, प्राचीन भारत के इतिहास में गुप्तकाल का वही महत्त्व है, जो यूनान के इतिहास में *पेरिक्लीयन युग* का है।' गुप्तकाल को संस्कृत साहित्य का स्वर्णयुग कहा जाता है। इस युग में कई महान साहित्यकारों ने अपने योगदान से भारतीय साहित्य के नये युग की शुरुआत की थी। इस युग के कुछ साहित्यकारों एवं उनकी रचनाओं का उल्लेख निम्नलिखित है:

कालिदास की महत्त्वपूर्ण कृतियां हैं- अभिज्ञान- शाकुन्तलम्', 'ऋतुसंहार', 'मालविकाग्निमित्रम्', कुमारसम्भव', 'मेघदूत', 'रघुवंश' और 'विक्रमोर्वशीयम्'। कई भारतीय विद्वानों के अनुसार, समस्त कलाओं में नाटक सर्वश्रेष्ठ है, समस्त नाटकों में 'शाकुन्तलम्' सर्वश्रेष्ठ है, *'शाकुन्तलम्'* नाटक का चतुर्थ अंक सर्वश्रेष्ठ है और उस अंक में वे श्लोक सर्वश्रेष्ठ हैं, जिनमें कण्व ऋषि अपनी दत्तक पुत्री को विदा करते हैं। शाकुन्तलम्' में कालिदास की प्रतिभा अपने सर्वोच्च शिखर पर दिखायी देती है। समालोचकों का कथन है कि कालिदास की कविता अपने सौंदर्य, सरलता, विचारों तथा

कल्पनाशीलता के कारण प्रसिद्ध है। उसकी उपमाएं सुन्दर, अनुकूल और विविधतापूर्ण हैं। चरित्र-चित्रण में उसका कोई सानी नहीं है। प्रेम और करुणा के भावों को प्रकट करने में वह उत्कृष्ट है। उसकी सुन्दर भाषा में कई गूढ़ तत्त्व हैं।

भास के तेरह नाटकों के नाम हैं- मध्यमव्यायोम, दूतवाक्य, बालचरित, प्रतिमा, अभिषेक, अविमार्क, प्रतिज्ञा यौगन्धरायण, स्वपनवासवदत्ता, चारुदत्त, दूतघटोत्चक, कर्णभार, उरुभन्ङ्ग और पंचरात्र। भास की प्रशंसा कालिदास और बाण ने भी की है।

संस्कृत साहित्य के सर्वाधिक रोचक नाटकों में से एक *'मृच्छकटिकम्'* का लेखक शूद्रक भी इसी युग में था। *विशाखदत्त* ने *'मुद्राराक्षस'* नाटक लिखा, जिसमें उस क्रांति का वर्णन है, जिससे चन्द्रगुप्त मौर्य मगध के सिंहासन पर बैठा। विशाखदत्त को *'देवीचन्द्रगुप्तम'* का लेखक भी माना जाता है। भट्टी ने *'रावणवध'* पुस्तक लिखी, जिसे *'भट्टिकाव्य'* भी कहा जाता है। राम की कथा देते हुए यह पुस्तक व्याकरण के नियम भी समझाती है। मातृगुप्त और भर्तृमेघ भी इसी युग के थे, किन्तु उनकी कृतियां लुप्त हो चुकी हैं। नाटककार शौमिल्ल और कुलपुत्र भी इसी युग के थे। *विष्णु शर्मा* ने इसी काल में *'पंचतन्त्र'* की रचना की। यह पुस्तक विश्व साहित्य में अत्यन्त महत्त्वपूर्ण स्थान रखती है। इसका विश्व के 50 से अधिक भाषाओं में अनुवाद हो चुका है।

पुराणों की रचना गुप्तकाल से काफी पहले की गयी थी, किन्तु इस काल में उन्हें अभिनव बनाया गया। कलियुग के वंशों का इतिहास 350 ई. तक लिख दिया गया। विष्णु और शिव की स्तुति में कई परिच्छेद जोड़े गये। इसी काल में याज्ञवल्क्य, नारद, कात्यायन और बृहस्पति की स्मृतियां लिखी गयीं। कहा गया है कि *'याज्ञवलक्य स्मृति'* इस विषय पर एक नियमानुकूल और सन्तुलित पुस्तक है। कामन्दक कृत *'नीतिसार'* की रचना संभवत: गुप्त शासकों के किसी मंत्री ने की थी।

'*हितोपदेश*' संभवतः गुप्तकाल में ही लिखी गयी थी। ईश्वरकृष्ण ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'सांख्यकारिका' या सांख्य पद्धति की रचना की। वात्स्यायन ने 'न्यायभाष्य' या न्याय-पद्धति दर्शन लिखा। प्रशस्तपाद ने 'पदार्थ-धर्म संग्रह' या वैशेषिक पद्धति दर्शन लिखा। योगदर्शन पर व्यास-भाष्य' की रचना की गयी। बोधायन जैसे दार्शनिक भी गुप्तकाल में ही हुए। दण्डी ने इसी युग में 'काव्यादर्श' और 'दशकुमारचरित' की रचना की। बौद्ध लेखक असंग ने 'योगाचारभूमि शास्त्र' और 'महायान सम्परिग्रह' की रचना की। वसुबन्धु ने महायान तथा हीनयान बौद्ध दर्शन पर कई पुस्तकें लिखीं। दिङ्नाग ने 'प्रमाण समुच्चय' की रचना की। परमार्थ ने वसुबन्धु की जीवन-कथा लिखी। बौद्ध विद्वान चन्द्रगोमिन ने 'चन्द्र व्याकरण' की रचना की। उपर्युक्त विवेचन के आधार पर यह कहा जा सकता है कि गुप्तकाल में साहित्य की हर विधा में काफी कुछ लिखा गया और काफी अच्छा लिखा गया, जो कालान्तर में साहित्यकारों के

लिए मार्गदर्शक सिद्ध हुआ।

गुप्तकाल में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में भी काफी विकास हुआ। *आर्यभट्ट, वाराहमिहिर* और *ब्रह्मगुप्त*, जो इसी युग के थे, को *संसार के प्रथम नक्षत्र वैज्ञानिक और गणितज्ञ* कहा गया है। आर्यभट्ट ने '*सूर्य सिद्धान्त*' लिखा। उसने सूर्यग्रहण और चन्द्रग्रहण के वास्तविक कारण बताये। आर्यभट्ट पहला भारतीय नक्षत्र वैज्ञानिक था, जिसने घोषणा की कि पृथ्वी अपनी धुरी पर घूमती है। उसने नक्षत्रीय चलन के परिवर्तनों के के कारणों का भी वर्णन किया। वाराहमिहिर की पुस्तक 'वृहत्संहिता' में नक्षत्र विद्या, वनस्पति शास्त्र, प्राकृतिक इतिहास और भौतिक भूगोल के विषयों पर चर्चा की गयी है। वाराहमिहिर ने 'पंच सिद्धांत', 'वृहज्जातक' और '*लघु जातक*' की रचना भी की। ब्रह्मगुप्त इस युग का महान नक्षत्र वैज्ञानिक और गणितज्ञ था। उसने यह घोषणा करके न्यूटन के सिद्धांत की पूर्व कल्पना कर ली थी कि "*प्रकृति के एक नियम के अनुसार सभी वस्तुएं पृथ्वी पर गिरती हैं, क्योंकि पृथ्वी स्वभाव से ही सभी वस्तुओं को अपनी ओर आकर्षित करती है।*"

चिकित्सा विधा से संबंधित नवीनतम ग्रंथ की रचना गुप्त काल में ही की गयी। इस पुस्तक में नुस्खे, सूत्र और उपचार-विधियां दी गयी हैं। पलकाप्व ने पशु-चिकित्सा पर '*हस्त्यायुर्वेद*' लिखा। *अत्रय* (शल्य चिकित्सक), चरक एवं सुश्रुत इसी युग में थे। चरक द्वारा रचित '*चरकसंहिता*' और सुश्रुत द्वारा रचित '*सुश्रुत संहिता*' चिकित्साशास्त्र की अद्वितीय उपलब्धियां मानी जाती हैं।

गणित पर 'आर्यभट्टीय' नामक एक ग्रंथ लिखा। इलाहाबाद से प्राप्त 448 ई. का एक गुप्तकालीन अभिलेख इस बात का साक्ष्य प्रस्तुत करता है कि उस समय भारतीयों को दशमलव पद्धति का ज्ञान हो चुका था। नक्षत्र विज्ञान के क्षेत्र में ग्रीक विचारों के प्रभाव को स्वीकार करते हुए 'रोमक सिद्धांत' नामक एक ग्रंथ भी इसी काल में लिखा गया था।

प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में भी इस युग में काफी विकास हुआ था। गुप्तकाल के शिल्पकारों एवं धातुकर्मियों ने लौह एवं कांस्य की बहुत-सी वस्तुओं को बनाना सीख लिया था। इस युग में बुद्ध की कांस्य मूर्तियां बड़ी मात्रा में और बेहद ही सुन्दरता के साथ बनायी गयी थीं। लौह वस्तुओं में उल्लेखनीय विकास के प्रमाणस्वरूप दिल्ली के मेहरौली क्षेत्र में स्थापित लौह स्तंभ को लिया, जा सकता है, जो आज भी अपनी चिकनाहट, चमक एवं कलात्मक संरचना के कारण एक अनमोल कलात्मक नमूना बना हुआ है। 15 सौ साल गुजर जाने के बाद भी यह लौह स्तंभ बगैर जंग खाये आज भी खड़ा है।

उपर्युक्त विवेचन के आधार पर यह कहा जा सकता है कि गुप्तकाल, साहित्य की तरह विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में भी भारतीय इतिहास का एक *स्वर्णयुग* था।